কেঁউতি জপেঁ
দেউৰী ভাষা প্ৰৱেশিকা
देउरी भाषा प्रवेशिका
DEORI PRIMER

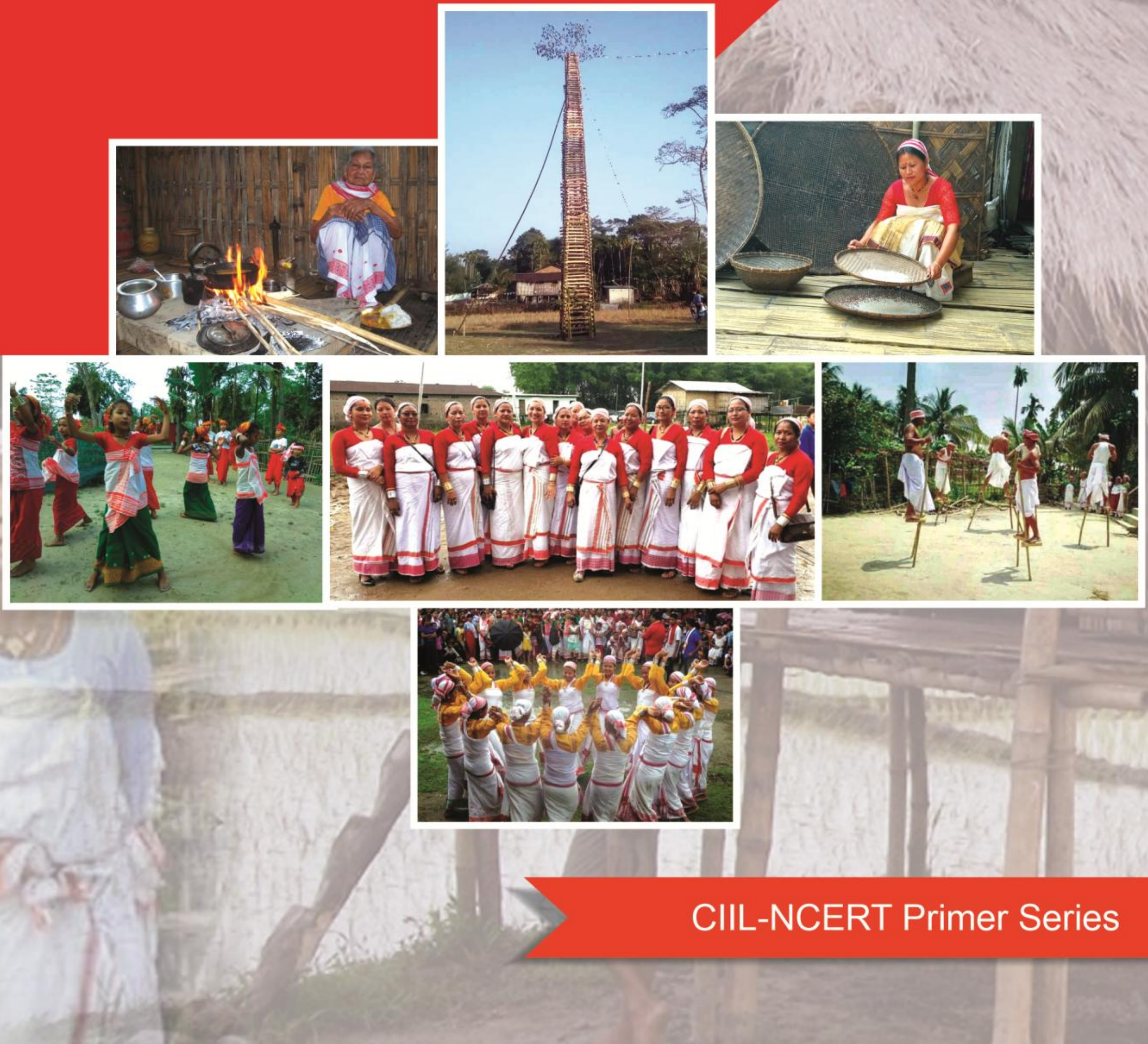

CIIL-NCERT Primer Series

ई–पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई–सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य–सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई–पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई–सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई–सामग्री प्राप्त करें।

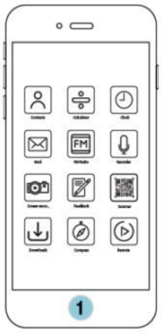

प्ले स्टोर से ई–पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें

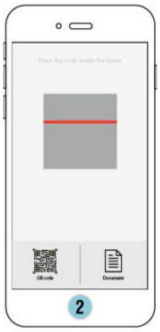
QR code
Document
2

क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें

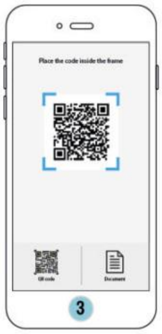
Place the code inside the frame
QR code
Document
3

स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें

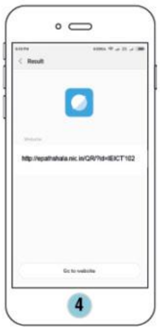
Result
http://epathshala.nic.in/QR/?id=IEICT102
Go to website
4

लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें

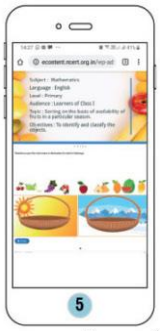

उपलब्ध ई–सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई–पाठशाला द्वारा ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

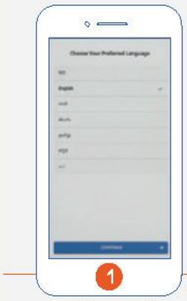
Choose Your Preferred Language
1

अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें

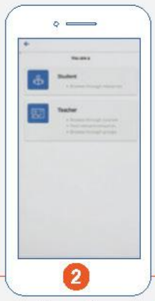
Student
Teacher
2

अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी

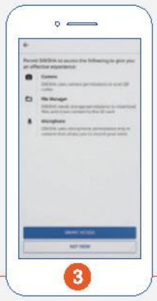

पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें

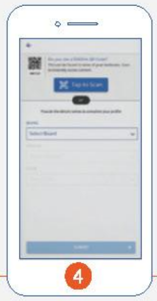

क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें

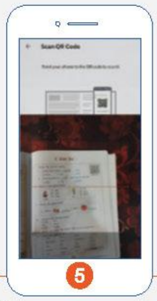
Scan QR Code
5

कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें

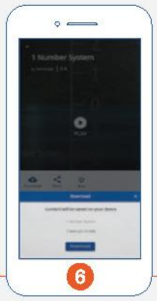
1 Number System
6

क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

কেঁউতি জপেঁ

দেউৰী ভাষা প্ৰৱেশিকা

देउरी भाषा प्रवेशिका

DEORI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
Email: dceta.ncert@nic.in

কেঁউতি জপেঁ
দেউৰী ভাষা প্ৰৱেশিকা
देउरी भाषा प्रवेशिका
DEORI PRIMER

A basal reader of Deori alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Aleendra Brahma
Jahnobi Kalita

ISBN: 978-81-19411-44-3

First Edition: March 9, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Nandakumar L
Cover Photo: Navajyoti Deori

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ-साथ बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/ घरेलू भाषा/ स्थानीय भाषा/ क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण पर बल देती है। भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। हमारे देश के कई क्षेत्रों में बच्चों को स्कूलों में पढ़ाने की भाषा समझने में कठिनाई होती है। इसके लिए मातृभाषा/ स्थानीय भाषा/ घर में बोली जाने वाली भाषा में शब्द जोड़कर, स्थानीय गीतों और कहानियों को सुनाकर बच्चों की इस कठिनाई को दूर करना आवश्यक है। बच्चों को अक्षर-पहचान के साथ-साथ अर्थपूर्ण ढंग से पढ़ना और लिखना सिखाया जाना चाहिए। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ । अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएं बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णत: नि:शुल्क रूप से भी उपलब्ध होगी।

ये प्रवेशिकाएं राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इनमें शिक्षकों को यह समझने हेतु भी पर्याप्त अवसर दिए गए हैं कि बच्चों को भाषा का प्रारंभिक ज्ञान सही विधि से कैसे कराया जाए। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों और शब्दों के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और अपना बहुमूल्य समय लगाया। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से भाषाओं तथा मातृभाषाओं के पठन-पाठन हेतु बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को लाभ होगा।

धर्मेन्द्र प्रधान

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा स्वच्छ भारत **कौशल भारत, कुशल भारत**

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

प्राक्कथन

भाषा समाज का एक अभिन्न अंग है। भाषा संस्कृति का एक उपादान है, समुदाय की पहचान है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी है। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है-एक ओर भारत की भाषिक विविधता को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। साथ ही यह भी बताता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारतीय संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं के मुद्दों पर हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित बिंदु है कि बच्चों के पास भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों-ये किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को '*बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति*' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह मज़बूत नींव न केवल भविष्य में विद्यालय एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं) प्राइमरों(का लक्ष्य छोटे बच्चों या अन्य भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से सुपरिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये पुस्तिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों, जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी। शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

मार्च, 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्याधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अधययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilized efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognizing, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarizes children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

ভাৰতবৰ্ষ এখন বহুভাষিক ৰাষ্ট্ৰ। ভাৰতৰ বিভিন্ন প্ৰান্তত বিভিন্ন ভাষা প্ৰচলিত। আমাৰ দেশৰ সাধাৰণ বৈশিষ্ট্য হৈছে যে আমি মৌখিকভাৱে একাধিক ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰোঁ আৰু ইয়াৰ আনন্দ ল'ব পাৰোঁ। বহুভাষিকতাই ভাৰতীয়সকলক একত্ৰিত কৰি ৰাখে। ২০২০ ৰ এন ই পি (NEP) য়ে এই কথা প্ৰমাণ কৰে যে ভাৰতৰ বহুভাষিক প্ৰকৃতি দেশখনৰ মহত্বপূৰ্ণ সম্পত্তি আৰু শক্তি, যি দেশৰ আৰ্থ-সাংস্কৃতিক, অৰ্থনৈতিক আৰু শৈক্ষিক উন্নয়নৰ বাবে আৱশ্যক। ইয়াত শিক্ষাৰ প্ৰতিটো স্তৰতে বহুভাষিকতাক প্ৰসাৰিত কৰাৰ পৰামৰ্শ দিয়া হৈছে যাতে শিক্ষাৰ্থীসকলে নিজৰ ভাষাত অধ্যয়ন কৰাৰ সুযোগ লাভ কৰে। সকলো ভাৰতীয় ভাষাত পাঠদান-শিক্ষণ সামগ্ৰী সৃষ্টি কৰিলে এই বহুভাষিক সম্পদ আৰু অধিক চহকী হ'ব আৰু 'বিকশিত ভাৰত'ৰ দৃষ্টিকোণক অধিক

অৰিহণা যোগাব। ২০২০ৰ এন ই পিৰ সৈতে সংগতি ৰাখি ভাৰতৰ প্ৰতিটো প্ৰান্তৰ অনন্য ভাষিক আৰু সাংস্কৃতিক বৈশিষ্ট্যসমূহক সম্বোধন কৰাৰ কাৰণে প্ৰাৰম্ভিক স্তৰত প্ৰাইমাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ এক ব্যাপক আৰু বিশাল পদ্ধতিৰ প্ৰয়োজন। এই প্ৰাইমাৰসমূহৰ উদ্দেশ্য হৈছে প্ৰাথমিক শ্ৰেণীৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক পঢ়া-লিখাত দক্ষতা বৃদ্ধি কৰোৱাৰ লগতে সৃষ্টিশীলতা আৰু সমালোচনাত্মক চিন্তাধাৰাক উৎসাহ যোগোৱা। এই প্ৰাইমাৰসমূহে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক এটা বা ততোধিক আখৰৰ গোটৰ অৰ্থৰ সৈতে পৰিচয় কৰোৱাই দিব। যেনে— এটা আখৰ শব্দৰ আদ্যস্থান, মধ্যস্থানত আৰু অন্ত্যস্থানত কিদৰে ব্যৱহাৰ হয় আৰু শেষত পাঠটোত বৰ্ণনা কৰা আখৰবোৰৰ সহায়ত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে লিখাৰ অভ্যাস কৰিব পাৰিব। ছন্দ মিলাই লিখা অকনিৰ গীতসমূহে শিশুসকলক তেওঁলোকৰ ভাষা বিকাশত সহায় কৰিব আৰু সজ্ঞানমূলক দক্ষতা আৰু স্মৃতিশক্তি বৃদ্ধি কৰিব।

मार्च, 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Deori Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra P. Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology, NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Member Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Co-Coordinators

Salam Brojen Singh, RP (Teaching) in Manipuri, North Eastern Regional Language Centre (NERLC), (CIIL), Guwahati
Gayotree Newar, RP (Teaching) in Nepali, NERLC, (CIIL), Guwahati
Milan Subba, RP (Teaching) in Nepali, NERLC, (CIIL), Guwahati

Resource Persons

Lila Deori, Chairman, Research Committee, Deori Sahitya Sabha, Assam
Navajyoti Deori, Member, Research Committee, Deori Sahitya Sabha, Assam
Saranan Deori, President, Deori Sahitya Sabha, Assam

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, RP (Teaching) in Bodo, NERLC, (CII), Guwahati
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Puttaraju K, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

দেউৰী আদিপাঠখন কেনেকৈ পঢ়ুৱাব লাগিব

২০২০ চনৰ নতুন ৰাষ্ট্ৰীয় শিক্ষা নীতি আৰু ২০২২ চনৰ ৰাষ্ট্ৰীয় পাঠ্যক্ৰম ৰূপৰেখাৰ অধীনত তিনি বছৰৰপৰা আঠ বছৰ বয়সৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক তেওঁলোকৰ মাতৃভাষা, ঘৰুৱা ভাষা, স্থানীয় ভাষা আৰু আঞ্চলিক ভাষাত শিক্ষা প্ৰদান কৰাৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছে। কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে ৩ বছৰৰপৰা ৫ বছৰ বয়সৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক প্ৰাক্-প্ৰাথমিক আৰু প্ৰথম-দ্বিতীয় শ্ৰেণীৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক প্ৰাথমিক পৰ্যায়ত মৌলিক সাক্ষৰতা প্ৰদানৰ ব্যৱস্থা কৰিছে। সেয়েহে দেউৰী ভাষাত লিখা পাঠ্যপুথিখনত সৰু সৰু অকণিৰ কবিতা আৰু শব্দৰ জৰিয়তে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ দ্বিধাবোধ আঁতৰাই তেওঁলোকৰ মৌখিক ভাষাৰ বিকাশৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিয়া হৈছে। পাঠ্যপুথিখনত দেউৰী ভাষাৰ বৰ্ণমালাৰ পৰিচয় কৰোৱাৰ লগতে ছবিৰ সহায়ত শব্দৰ পৰিচয় দিবলৈ যত্ন কৰা হৈছে।

ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে নিজৰ মাতৃভাষাত পঢ়িবলৈ আৰু লিখিবলৈ শিকাৰ সমান্তৰালভাৱে কেনেকৈ হিন্দী আৰু ইংৰাজী ভাষা পঢ়িব আৰু লিখিবলৈ শিকিব পাৰে, সেই বিষয়ে ২০২২ চনৰ ৰাষ্ট্ৰীয় পাঠ্যক্ৰমৰ ৰূপৰেখাত বিতংভাৱে লিখা আছে। সেয়েহে দেউৰী ভাষাৰ বৰ্ণমালা পাঠ্যপুথিখনত শিশুৰ মাতৃভাষাৰ লগতে দেউৰী ভাষা আৰু অসমীয়া ভাষাৰ শব্দ অন্তৰ্ভুক্ত কৰা হৈছে। এই শব্দসমূহ শিশুৰ চাৰিওকাষৰ পৰিচিত পৰিৱেশৰপৰা সংগ্ৰহ কৰি পাঠ্যপুথিখনত সন্নিৱিষ্ট কৰা হৈছে।

বহুভাষিক শিক্ষাৰ মূল লক্ষ্য হৈছে, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ ঘৰুৱা ভাষাত পঢ়া-লিখাৰ দক্ষতা বৃদ্ধি কৰা। দেউৰী আৰু অসমীয়া ভাষাত উপস্থাপন কৰা পাঠ্যপুথিখন কণ কণ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বাবে প্ৰণয়ন কৰা হৈছে। পাঠ্যপুথিখনৰ প্ৰধান লক্ষ্য হৈছে অকণিৰ কবিতা আৰু ছবিৰ জৰিয়তে শিশুৰ বৌদ্ধিক আৰু মানসিক বিকাশ কৰা। দ্বিতীয়তে, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক ভাষা শিক্ষণৰ বাবে আখৰৰ লগতে শব্দৰ সৈতে পৰিচয় কৰা।

পাঠ্যপুথিখন কেনেকৈ ব্যৱহাৰ কৰিব লাগে সেই বিষয়ে তলত উল্লেখ কৰা হৈছে—

ধ্বনি পৰিচয় : ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে ছবিখন দেখাৰ পিছত বস্তুটোৰ নাম ক'ব। ছবিখনৰ নামটো কি ধ্বনিৰে আৰম্ভ হৈছে সেই কথা শিক্ষকে ছাত্ৰক সুধিব। যেনে— **'অতু'**'ৰ ছবিখন দেখাৰ পিছত ইয়াৰ আৰম্ভণি **/অ/** ধ্বনিৰে হৈছে বুলি ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে বুজি পাব।

বৰ্ণমালাৰ পৰিচয় : **'অ'** আখৰটো দেখিবলৈ কেনেকুৱা হয় শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক শিকাব। পাঠ্যপুথিত দিয়া হোৱা কিছুমান শব্দৰপৰা **'অ'** আখৰটো বিচাৰি উলিয়াবলৈ ক'ব। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে তিনি-চাৰিটা শব্দৰপৰা **'অ'** আখৰৰ ধ্বনি উচ্চাৰণ কৰিব আৰু **'অ'** আখৰটো লিখাৰ অভ্যাস কৰিব।

পঠন : ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে ছবি চাই শব্দবোৰৰ নাম ক'ব। সেই শব্দ বাওঁফালৰপৰা সোঁফাললৈ আঙুলিৰে নিৰ্দেশ কৰি ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে **'অতু'** শব্দটো পঢ়িব। **'অ'**-ৰে আৰম্ভ হোৱা আন আন শব্দবোৰ পঢ়ি তেওঁলোকে **'অ'** আখৰটো বিচাৰি উলিয়াব আৰু ক'বলৈ শিকিব। আদ্যস্থান, মধ্যস্থান আৰু অন্ত্যস্থানত **/অ/** ধ্বনিৰ ব্যৱহাৰ সম্পৰ্কে শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক ক'ব। **'অ'** পঢ়ি থাকোঁতে শিক্ষকে **'অতু'** শব্দটোৰ লগতে আন তিনি-চাৰিটা শব্দ বৰ্ডত লিখিব। এজন এজনকৈ সকলো ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক বৰ্ডৰ ওচৰলৈ মাতিব আৰু উচ্চাৰণ কৰি লিখিবলৈ দিব।

আখৰ চিনাকি আৰু শব্দ পঢ়াৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা সকলো শব্দ শিশুৰ পৰিচিত জগতখনৰপৰা লোৱা হৈছে। পাঠ্যপুথিখনত থকা ছবিবোৰ চাই ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে শব্দবোৰৰ লগত পৰিচয় হ'ব। শিক্ষকে এটা শব্দ লিখি তাৰ প্ৰতিটো আখৰ পৃথকে পৃথকে ক'ব। আখৰবোৰ যোগ কৰি শব্দটো পঢ়িবলৈ শিকোৱা হ'ব। এজন ছাত্ৰই এটা শব্দ পঢ়িব আৰু আন ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে তেওঁৰ লগত পুনৰাবৃত্তি কৰিব। ইয়াক 'সামূহিক পঠন' বুলি কোৱা হয়।

প্ৰতিটো পাঠৰ লগত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ বাবে আখৰ লিখাৰ ক্ৰিয়া-কলাপ দিয়া হৈছে। শিক্ষকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক ক্ৰিয়া-কলাপসমূহ কৰাত সহায় কৰিব। ক্ৰিয়া-কলাপসমূহ শিকাৰুৰ অনুশীলন আৰু মূল্যায়নৰ বাবে দিয়া হৈছে। পাঠৰ ক্ৰিয়া কলাপসমূহ কৰাওঁতে স্ব-শিকন আৰু দলীয় শিকনত গুৰুত্ব দিব|

পাঠত থকা অকণিৰ কবিতাসমূহৰ উপৰি স্থানীয়ভাৱে প্ৰচলিত গীত-মাত আদি শিক্ষকে সংগ্ৰহ কৰি অনুশীলন কৰোৱাব। পাঠত থকা ছবিৰ উপৰি সংগতি থকা আন আন ছবি উপস্থাপন কৰিব আৰু অভিনয় কৰোৱাৰ সুবিধা থকা পাঠসমূহ অভিনয় কৰি দেখুৱাব। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ চিন্তাৰ বিকাশ হোৱাকৈ কিছুমান ক্ৰিয়া-কলাপ দি শিক্ষকে অধিক অনুশীলন কৰোৱাব।

পাঠ্যপুথিখনত ভাষা আৰু পৰিৱেশৰ বিষয়বস্তু সমন্বিতভাৱে দিয়া হৈছে। গতিকে ইয়াত ভাষা শিক্ষাৰ লগতে পাঠ অনুযায়ী সন্নিৱিষ্ট হোৱা পৰিৱেশৰ কথাবোৰ শিকাব।

কুমহঁ লেৰুবা চিন কানিনা অতবে আৰে অগাংনা দুঁনুমা জেগাহ’ লিদাৰিজাঁমে :

তাগাবা চিন :

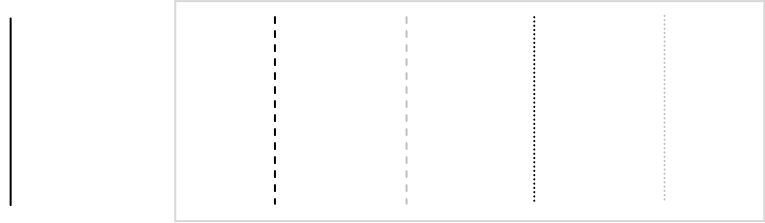

কুৰুঁনুমা চিন :

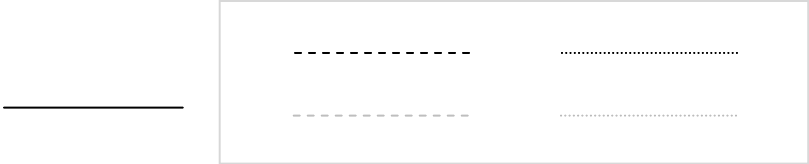

অজা কুৰুচিৰাঁমা চিন **১** :

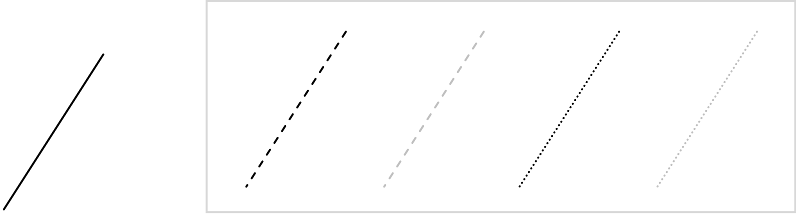

এবুৰিয়া কুৰুচিৰাঁমা চিন **২** :

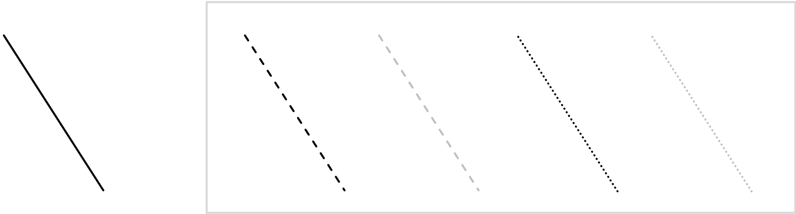

গুৰাচ্চায়া তুমুৰু **১** :

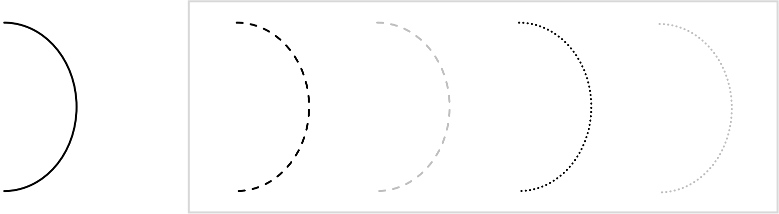

গুৰাচ্চায়া তুমুৰু **২** :

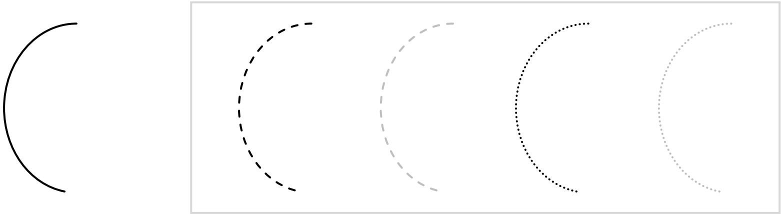

ছুগিংগিৰিয়া : দাকিং পেনচিলনা অদিজেঁই আৰকে পিচ্চহ’ লেৰুবা অগাংনা দুঁনুমা জেগাহ’ লিদাৰিজেঁই বানা নিজিঁনে।

গিচ্চালি

(বৰ্ণমালা)

অৰিং গিচ্চা

(দেউৰী স্বৰবৰ্ণ)

অ আ ই উ

এ ঐ ঔ

কৰিং গিচ্চা

(দেউৰী ব্যঞ্জনবৰ্ণ)

ক গ ঙ চ চ্চ

জ ত দ ন প

ব ম ৰ ল ৱ

হ য় ◌ং ◌ঁ

অ

অতুঁ

হাত

অতুঁহ’ অতুঁ নিজুংনা
জউ অজজুৰি

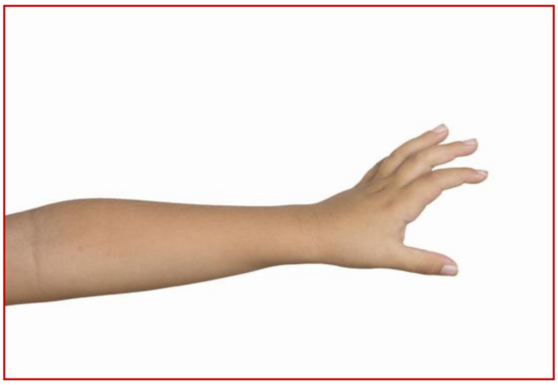

অচতি

আঙুলি

অজিং

কমলা

অতুঁকুপি

হাতৰ মুঠি

অ অ অ

আ

আৰন

টুপি

দিঙ্ গিৰায়’ কিং গুৰি
নুৰা গুমহঁ আৰন বঁনি

আকুঁ	আপাচু	আতাঁ
কাণ	ভৰি	কাঁড়

আ আ আ

ই

ইবাঁ

ফুল

ইজিৰি ইবাঁ বাঁনি
বানা হিজেংনা
ৰকচ কাৰি

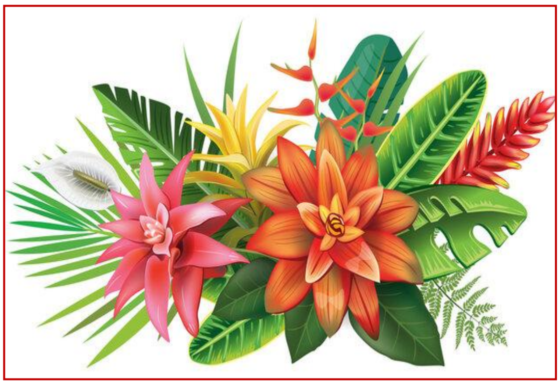

ইজিৰি	ৰইকা	কাকই
নাহৰ	বিন্ধা	কুলি

ই ই ই

উ

উচুঁ

খাৰু

দিৰবু পুজিয়’ উচুঁ
চ্চুচ্চাঁ তেগাবা উজুঁ

উজুং	বাউকা	তউ
চুঙা	বাউসি	টৌ

উ উ উ

এ

একি

ঢেঁকি

গুমতুলুং গুমতুলুং জিঁনি একি
আচ্চঁ কাচ্চনই লাদুৰি এচ্চি

এচ্চি	চ্চেমেচ্চি	লুজে
জখলা	পৰুৱা	ভেকুলী

এ এ এ

ঐ

মৈ

মৈ

দুকৈ তাকৈ উগাৰি
ঐয়া তৈলাহ' মি তেগাৰি

		© Steve Garvie
তৈলা	দুকৈ	তাকৈ
বস্তা	ভাটৌ	কেতেকী

ঐ ঐ ঐ

ঔ

মৌ

চোৰাত

মৌ য়েংনা মইচায়’
ইমাৰি চেক্‌চেকাৰি
বানা হিজেংনা দুলৌ
দেক্‌দেকাংনা হাতিগাৰি

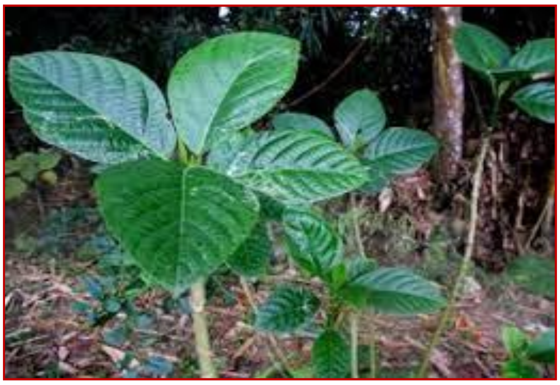

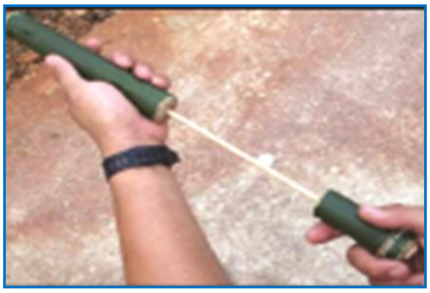

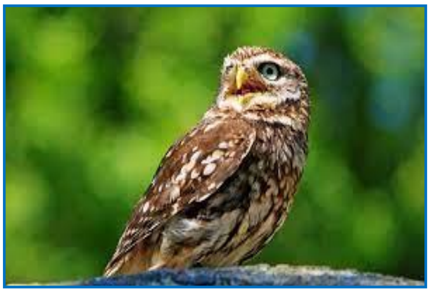

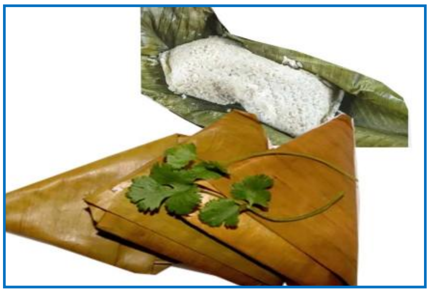

তৌতা	দুলৌ	কেমতৌ
বাঁহৰ হিলৈ	ফেঁচা	টোপোলা ভাত

ঔ ঔ ঔ

ক

ককমা

পঁইতাচোৰা

ইকু আগুঁজুৰাংনা ককিলি দেঁনি
মুকুতি মেচিংনা ককমা জাঁনি

ককিলি	মুকুতি	ইকু
পেঁপা	চকু	বান্দৰ

ক ক ক

গ

গাৰঁ

লোটা

গাৰঁহ’ জি লাংনা
কিমাৰু জি চেৰি
গঁৰ্ গঁৰ্ নংনা গগৈ গুতুঁ জিঁনেনি

গুতুঁ	গগলং	গগৈ
নাক	বন কুকুৰা	ভাইটি/ভন্টী

গ গ গ

ঙ

তঙাল

টঙাল

জকাহ’ তঙালি চ্চিদাংনা
পৰঙি জাৰি
চ্চিয়াঁচ্চং কুদাঁজুংনা
হিঙৰিকে কাৰি

পৰঙি	হিঙৰি	দিঙ্
টঙিজাল	শিঙৰি	ককা

ঙ ঙ ঙ

চ

চকি

জাকৈ

চকি লাংনা য়য়’ চ্চিয়াঁমাই কেৰি
চাজুং পেপেলাই মুগঁনে উচেঁনি

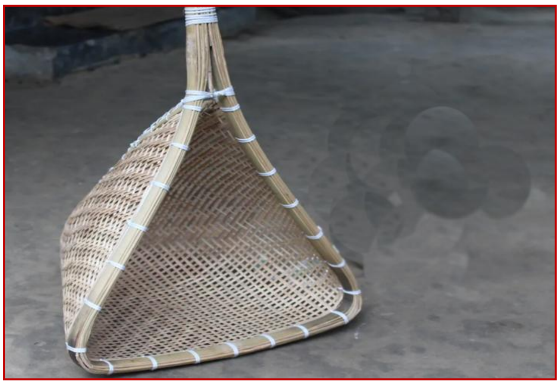

চঁই	কুচিৰি	মেচি
ঝাৰু	ঔষধ	পহু

চ চ চ

চ্চ

চ্চপা

ঔটেঙা

চ্চপাতিক’ তিকদাং
মিকাচ্চি-মিচ্চিমি তাৰবাং

চ্চমতা	মিচ্চিতি	মিকাচ্চি
মধুৰি	ধানৰ গুটি	মেচাকি

চ্চ চ্চ চ্চ

জ

জমতিং

মকৰা

জমতিঙে ৰজাঙে
জমতিং ৰজাংজাম্

জুগা	লেজেয়া	নাজি
শামুক	কেৰ্কেটুৱা	নাঙল

জ জ জ

ত

তপেঁ

বিচনা চাদৰ

য়য়’ তপেঁ পেঁনি
হিমংনা চিতাঁমি জিঁননি

তাকা	চিতাঁমি	হাতি
হেতা	মাখি	দাঁত

ত ত ত

দ

দুবু

সাপ

দুবুনানে লগুৰুচি নিনা ইচ্চাই
মিদুজিনাকে আইদেউ
জুবুৰা নিনা ইচ্চাই

দনিকনা	মিদুজি	দুদুঁ
ডঁৰিকনা	কচু	তৰাগাজ

দ দ দ

ন

নু

নাও

নুহ’ কাগাংনা চচুং জাৰি
চ্চাৰনি দিয়াংনা চ্চিয়াঁ লাগাৰি

নেপাপু	পানতি	চ্চাৰনি
নেফাফু	পাদুকা	চালনী

ন ন ন

প

পপঁ

গছ

পপঁ জাৰ' হই
জউনা চাতিৰিং লেই
পজা য়নত' পহিঁনি গিজেঁই

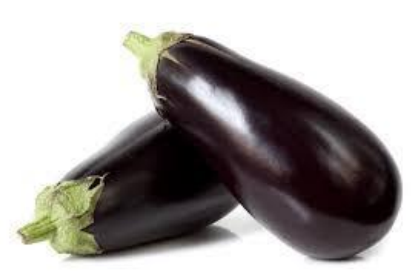

পাদুঁ

বেঙেনা

দুপাদু

মতা কুকুৰা

গেপা

পাচি

প প প

ব

বাচিং

টঙিঘৰ

বাচিঙ' দুদুংনা কুকাৰি কুগাৰি
ইবাঁতুহ' হিদুংনা জউ অজৰি

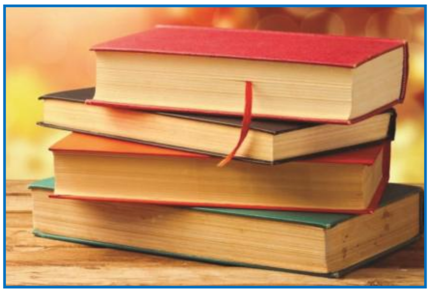

বিবঁ	ইবাঁতু	য়েৰুবঁ
ভঁৰাল	ফুলনি	কিতাপ

ব ব ব

ম

মচি

মানুহ

মচি দুমচা দেৰুৱি
তাকুম লাংনা
মে মেচ্চা মিমি কৰি
মিউ মিউ নংনা

মিদিগেঁ	দুমচা	তাকুম
মেকুৰী	কুকুৰা পোৱালী	লাঠি

ম ম ম

ৰ

ৰইনা

কোৰোণা

ৰইনাচ্চং গিৰাৰা মি বুগাদুৰি
ৰহিলা কুকাৰিচ্চং মিৰিকা ককুৰি

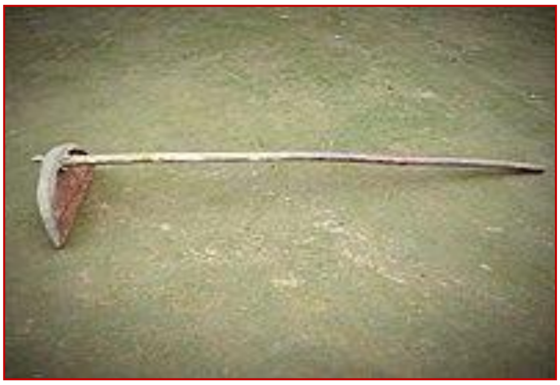

ৰুপি
কাঁহ

মিৰিকা
কেৰেলা

কুকাৰি
খৰাহী

ৰ ৰ ৰ

ল

লুৱা

কুঠাৰ

লুদুমহ’ তেগাবে বচে
বাদুলি কিগাদুবে
কলচিহ’ কুৱাবে জি
জিমু-জিকা চুবে

লাতিম

লাটুম

কলচি

কলহ

বাদুলি

তলা

ল ল ল

ৱ

ৱাংপুঁ

খৰি

ৱাংপুঁ চুদুৰি গৌ গৌচ্চা নুৱাঁনি
আতাঁহ' দুদুংনা মেচুৱাঁহ' হাৰি

বকুৱা	দুৱা	য়ুৱা
ডেউকা	চৰাই	বাঁহ গছ

ৱ ৱ ৱ

হ

হইবা

সখী

হাদুৰাহ’ মেহেঙা লাগাৰি
হইবা চুজেঁ পুৰুঁনি
বিলাহি কহাংনা বুজি
কাজি নিয়াঁনি

হাদুৰা	লিহিয়া	বিলাহি
মাটিৰ ঢিপ	কেৰাহী	বিলাহী

হ হ হ

য়

য়মা

চেপা

য়গি লাংনা কিৰৰি য়মা চ্চঁকুনই
চ্চদিয়ানা লাহাবে মিয়তু চ্চুচ্চেনই

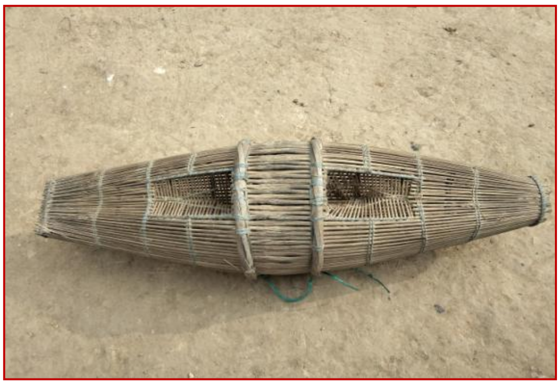

য়গি	মিয়তু	চ্চদিয়া
দা	লাইশাক	চৰিয়া

য় য় য়

অৰিং গিচ্চা	অৰিং চিন	চামজে	আমু
অ	◌	মকঁ	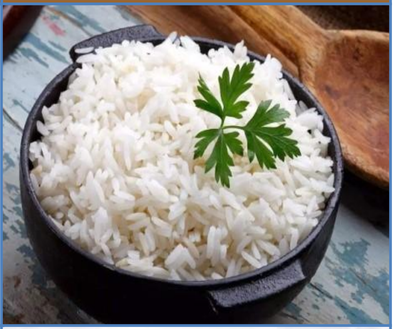
আ	◌া	বাচিং	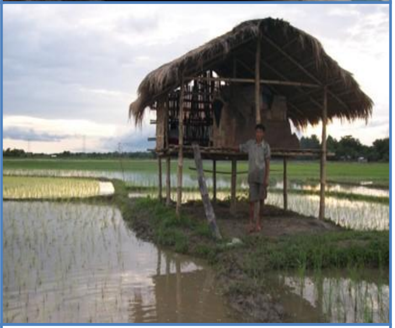
ই	◌ি	গিচা	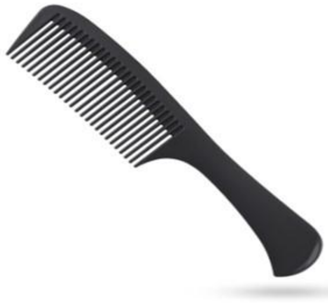
উ	◌ু	দুজাঁ	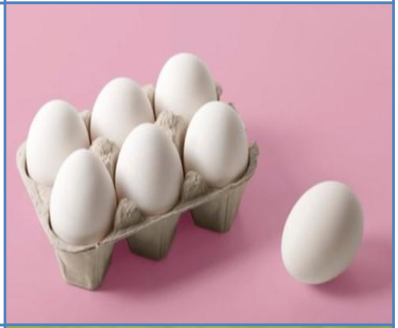
এ	◌ে	মেগঁ	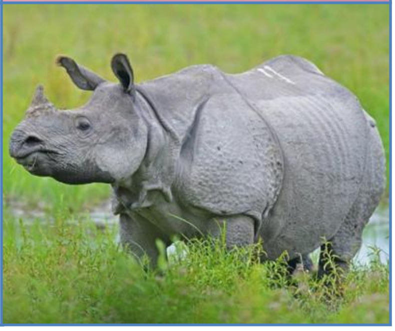

অৰিং গিচ্চা	অৰিং চিন	চামজে	আমু
ঐ	◌ৈ	তাকৈ	
ঔ	◌ৌ	জৌ	

জুগিবেনা কবে

১	আ	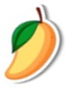
২	নি	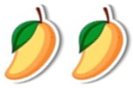
৩	দা	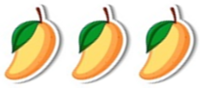
৪	চ্চি	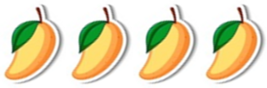
৫	ব্রা	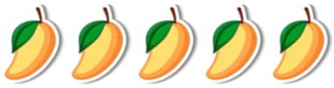
৬	চ্চু	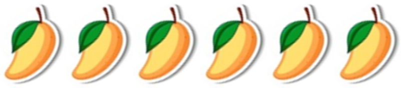
৭	চি	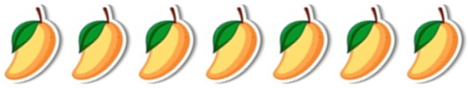
৮	চে	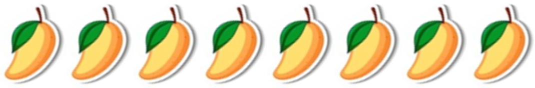
৯	গু	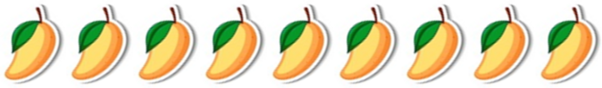
১০	গাং	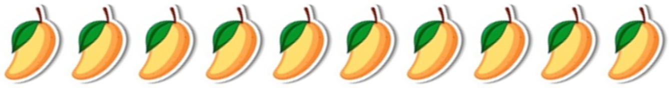

১১	গাংজা	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭
১২	গাংনি	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭
১৩	গাংদা	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭
১৪	গাংচ্ছি	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭
১৫	গাংব্রা	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭🥭
১৬	গাংচ্ছু	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭🥭🥭
১৭	গাংচি	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭
১৮	গাংচে	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭
১৯	গাংগু	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭
২০	নিগাং	🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭 🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭🥭

কুমহঁ লেৰুবা জুগিং কানিনা গিগিবে :

১	১	১	১	
২	২	২	২	
৩	৩	৩	৩	
৪	৪	৪	৪	
৫	৫	৫	৫	
৬	৬	৬	৬	
৭	৭	৭	৭	
৮	৮	৮	৮	
৯	৯	৯	৯	
১০	১০	১০	১০	

কুমহঁ লেৰুবা জুগিং কানিনা গিগিবে :

১১	১১	১১	১১	
১২	১২	১২	১২	
১৩	১৩	১৩	১৩	
১৪	১৪	১৪	১৪	
১৫	১৫	১৫	১৫	
১৬	১৬	১৬	১৬	
১৭	১৭	১৭	১৭	
১৮	১৮	১৮	১৮	
১৯	১৯	১৯	১৯	
২০	২০	২০	২০	

মিচ্ছা গিচ্ছালি

(অসমীয়া বৰ্ণমালা)

অ আ ই ঈ
উ ঊ ঋ
এ ঐ ও ঔ

ক খ গ ঘ ঙ
চ ছ জ ঝ ঞ
ট ঠ ড ঢ ণ
ত থ দ ধ ন
প ফ ব ভ ম
য ৰ ল ৱ
শ ষ স হ
ক্ষ ড় ঢ় য়
ৎ ◌ং ◌ঃ ◌ঁ

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

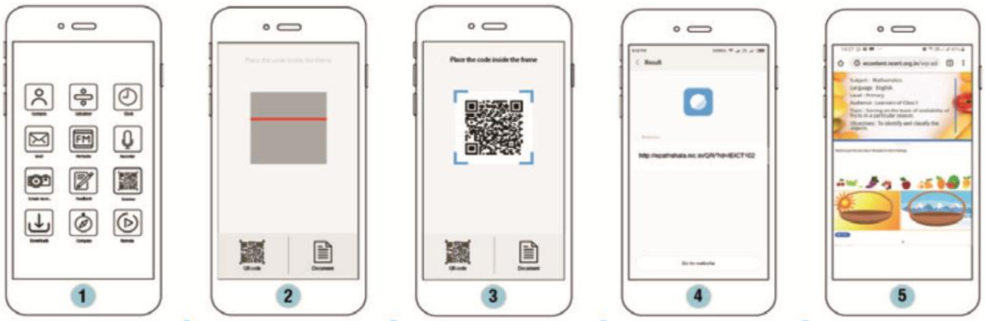

1 Install ePathshala Scanner app from Play Store and open

2 Get ready with QR code scanning window

3 Place scanner above the QR code

4 Select and click on the link

5 Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

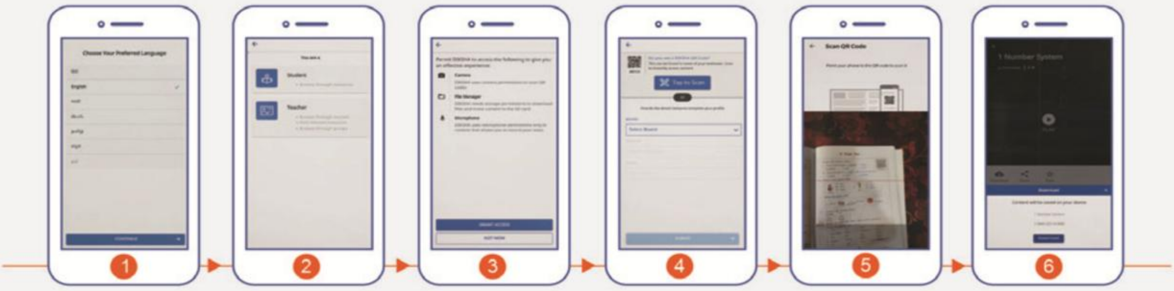

1 Select preferred language

2 Choose your role: Student or Teacher

3 Grant access and allow app permissions

4 Tap to scan the QR code

5 Focus camera on the QR code in textbook

6 Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT (Phase-1)

SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ASSAMESE	9	KONKANI	17	SANSKRIT
2	BENGALI	10	MAITHILI	18	SANTALI
3	BODO	11	MALAYALAM	19	SINDHI
4	DOGRI	12	MANIPURI	20	TAMIL
5	GUJARATI	13	MARATHI	21	TELUGU
6	HINDI	14	NEPALI	22	URDU
7	KANNADA	15	ODIA		
8	KASHMIRI	16	PUNJABI		

NON - SCHEDULED LANGUAGES

Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages	Sl. No.	Languages
1	ADI	20	KINNAURI	39	MISING
2	ANAL	21	KISAN (KUNHU)	40	MIZO
3	ANGAMI	22	KODAVA	41	MOGH
4	AO	23	KOKBOROK	42	MUNDARI
5	BHILI (VASAVA)	24	KOLAMI	43	NYISHI (NISSI)
6	BHUTIA	25	KONDA	44	RABHA
7	BISHNUPRIYA MANIPURI	26	KORKU	45	RAI
8	DEORI	27	KORWA	46	SHERPA
9	DIMASA	28	KOYA	47	SAVARA (SORA)
10	GADABA (GUTOB)	29	KUI	48	SÜMI (SEMA)
11	GARO	30	KUKI	49	TAMANG
12	HALBI	31	KURUKH	50	TANGKHUL
13	HMAR	32	KUZHALE (KHEZHA)	51	TANGSA
14	JATAPU (KUVI)	33	LEPCHA	52	TIWA (LALUNG)
15	JUANG	34	LIANGMAI	53	TULU
16	KABUI	35	LIMBU	54	WANCHO
17	KARBI	36	LOTHA		
18	KHANDESHI	37	MAO		
19	KHARIA	38	MISHMI (IDU)		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
☎ 0821 2515820 (Director) / ✉ ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
☎ 011 2696 2580 / ✉ dceta.ncert@nic.in